भगत कबीर – सबद ५

अहिनिसि एक नाम जो जागे ॥

रागु गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३३०

अहिनिसि एक नाम जो जागे ॥
केतक सिध भए लिव लागे ॥१॥ रहाउ ॥
साधक सिध सगल मुनि हारे ॥
एक नाम कलिप तर तारे ॥१॥
जो हरि हरे सु होहि न आना ॥
कहि कबीर राम नाम पछाना ॥२॥३७॥

सार: एक ही ऊर्जा में विश्वास जो विभिन्न रूपों में प्रकट होती है आध्यात्मिक परंपराओं का एक मौलिक सिद्धांत है। जब व्यक्ति इस विचार को गहराई से समझने लगते हैं तब वह सृष्टि के सभी हिस्सों को जोड़ने वाले विश्व्यापी संबंध को पहचानते हैं। इस चेतना के साथ सामंजस्य स्थापित करके वह ब्रह्मांड के साथ एकता की भावना विकसित कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन को प्रामाणिक रूप से जीते हैं और उन्हें प्रबुद्ध आत्मा या ज्ञानी व्यक्ति माना जा सकता है।

अहिनिसि एक नाम जो जागे ॥
जो लोग लगातार एकता का अभ्यास करते हैं वह आध्यात्मिक रूप से जागृत होते हैं।

केतक सिध भए लिव लागे ॥१॥ रहाउ ॥
उनमें से कई अपनी चेतना के साथ जुड़कर गहरी समझ और ज्ञान प्राप्त करते हैं। (१)(विराम)

साधक सिध सगल मुनि हारे ॥
साधना, चमत्कार, तपस्या करने और मौन रहने वाले भी अक्सर लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते।

एक नाम कलिप तर तारे ॥१॥
जो ईमानदारी से एकता की तलाश करते हैं उनकी इच्छा पूरी होती है और वह मोक्ष का अनुभव करते हैं। (१)

जो हरि हरे सु होहि न आना ॥
जो लोग विविधता में एकता को अपनाते हैं, वह समृद्ध होते हैं और उन्हें और कुछ पाने की इच्छा नहीं रहती।

कहि कबीर राम नाम पछाना ॥२॥३७॥
कबीर कहते हैं कि अस्तित्व में अदृश्य, सर्वव्यापी ऊर्जा के स्वरूप को पहचानने का प्रयास करो। (२)(३७)

तत्त्व: भगत कबीर हमें यह समझने की प्रेरणा देते हैं कि एक ही ऊर्जा सभी जीवों में प्रवाहित होती है। वह बताते हैं कि कर्मकांड का पालन करने के बावजूद कई लोग इस सत्य को नहीं समझ पाते। सच्चा ज्ञान और मुक्ति तभी मिलती है जब हम बाहरी भिन्नताओं से ऊपर उठकर उस एकता को पहचानें जो सभी सृष्टि को जोड़ती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com